# 8
# झाँसी की रानी

## कवयित्री परिचय –

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुरा ग्राम में हुआ था। आपने असहयोग आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी। सुभद्रा कुमारी जी ने प्रयाग से शिक्षा ग्रहण की और अनेक बार जेल गईं। विद्यार्थी काल से ही कविता लेखन करते हुए आप हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय भावधारा की प्रमुख कवयित्री रहीं। 'झाँसी की रानी' कविता से इन्हें विशेष ख्याति प्राप्त हुई। सुभद्राजी ने गद्य और पद्य में समान रूप से लेखनी चलाई है। 'कर्मवीर' आपकी कविताओं का प्रथम संकलन है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक कविताएँ यथा वात्सल्य प्रेम, पति–प्रेम की भावना से अनुप्राणित हैं। 'बिखरे मोती' इनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। 'बिखरे मोती' तथा कविता संग्रह 'मुकुल' दोनों पर ही इन्हें हिंदी साहित्य सम्मेलन का 'सेकसरिया पारितोषिक' मिला। भाषा शैली भावों के अनुरूप सरल और गति लिए हुए है।

## पाठ परिचय –

इस कविता में सुभद्राजी भारत के प्रथम स्वतंत्रता–संग्राम की प्रमुख क्रांतिकारी देवी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के प्रति अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित किए हैं। इस कविता में झाँसी की रानी 'लक्ष्मीबाई' के अदम्य साहस एवं शौर्य की गाथा गाई गई है। लक्ष्मीबाई ने सन् सत्तावन की क्रांति का नेतृत्व करते हुए निराश और हताश राजा–महाराजाओं में आशा का संचार किया था। लक्ष्मीबाई वीर शिवाजी की शौर्य गाथाएँ सुन–सुन कर एवं तलवार, बरछी, कटार के साथ खेल कर बड़ी हुई थी। लक्ष्मीबाई वीरता की अवतार थी। झाँसी के राजा के साथ इनका विवाह हुआ किंतु दुर्भाग्य से उनके पति शीघ्र ही चल बसे और 23 वर्ष की आयु में रानी विधवा हो गईं। इधर अंग्रेजों की गिद्ध दृष्टि झाँसी पर पड़ी और वे झाँसी को लावारिस मानकर अपना झंडा फहरा देते हैं, किंतु रानी लक्ष्मीबाई ने मरते दम तक अंग्रेजों से लोहा लिया तथा झाँसी की रक्षा की। अंत में रानी लक्ष्मीबाई को यमुना के तट पर अंग्रेजों ने घेर लिया। यहाँ पर लक्ष्मीबाई अपनी सहेलियों काना और मंदरा के साथ बहादुरी से लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई।

## मूल पाठ –

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,<br>
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,<br>
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,<br>
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावन में,
वह तलवार पुरानी थी ,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवा जी की गाथाएँ
उसको याद जबानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्रकुल देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आयी लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राज महल में बजी बधाई खुशियाँ छायीं झाँसी में,
सुभट बुन्देलों की विरुदावलि–सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छायी,
किंतु काल गति चुपके–चुपके काली घटा घेर लायी,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भायीं!
रानी विधवा हुई हाय, विधि को भी नहीं दया आई।

निःसन्तान मरे राजा जी,
रानी शोकसमानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फ़ौज भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रूपूर्ण रानी ने देखा,
झाँसी हुई बिरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं, नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महारानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

छिनी राजधानी देहली की, लखनऊ छीना बातों–बात,
कैद पैशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात ?
जब कि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र–निपात,

बंगाले मद्रास आदि की,
भी तो वही कहानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

रानी रोयीं रनवासों में, बेगम गम से थीं बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के जेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार'

यों परदे की इज्जत परदेशी
के हाथ बिकानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुन्धू पन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहन छबीली ने रण–चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान!

हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो
सोयी ज्योति जगानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम से आयी थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छायीं थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचायी थी,

जबलपुर कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आये काम,
नाना धुन्धू पन्त, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिमान,
भारत के इतिहास–गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती,
उनकी जो कुरबानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

इनकी गाथा छोड़, चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लफ्टिनेंट वौकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व असमानों में,

जख्मी होकर वौकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खायी थी,
काना और मुन्दरा सखियाँ रानी के संग आयी थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचायी थी,

पर पीछे ह्यूरोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

तो भी रानी मार–काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार–पर–वार,

घायल हो गिरी सिंहनी,
उसे वीरगति पानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

रानी गयी सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतन्त्रता–नारी थी,

दिखा गईं पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

जाओ रानी ? याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी –
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

•••

## कठिन शब्दार्थ

**भृकुटी** – भौहें
**फिरंगी** – अंगरेज
**बरछी** – हाथ से चलाने वाला एक अस्त्र
**पुलकित** – प्रसन्न होना
**दुर्ग** – किला
**सुभट** – बहादुर, वीर
**विरुदावलि** – शौर्य के गीत
**विधि** – भाग्य, ईश्वर
**वारिस** – उत्तराधिकारी
**रनवासों** – रानियों के रहने का स्थान
**वीरवर** – श्रेष्ठ बहादुर यौद्धा
**मनुज** – मनुष्य

## अभ्यासार्थ प्रश्न

### अतिलघूत्तरात्मक –

1. लक्ष्मीबाई किसकी मुँहबोली बहिन थी ?
2. लक्ष्मीबाई की सहेली कौन थी ?
3. रानी लक्ष्मीबाई बचपन में क्या खेल खेलती थी ?
4. झाँसी के राजा के मरने पर कौन हर्षाया ?

### लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. देश में व्यापारी बनकर कौन आए ?
2. रानियाँ और बेगमें क्यों रोती थीं ?
3. रानी लक्ष्मीबाई की आराध्य देवी कौन थी ?
4. लक्ष्मीबाई को किसकी गाथाएँ याद थीं ?
5. राजमहल में काली घटाएँ क्यों छा गईं ?
6. रानी के साथ किन सखियों ने युद्ध किया ?

### निबंधात्मक प्रश्न –

1. रानी लक्ष्मीबाई के बचपन की गतिविधियों का वर्णन कीजिए।
2. कविता के माध्यम से अंगरेजों की नीतियों तथा अत्याचारों का वर्णन कीजिए।
3. स्वतंत्रता की चिनगारी में किन–किन सपूतों ने लोहा लिया ?
4. रानी लक्ष्मीबाई के युद्ध कौशल का वर्णन कीजिए।
5. 'मिला तेज से तेज' कवयित्री ने ऐसा क्यों कहा ?

### निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

1. कानपूर के नाना..............................उसकी यही सहेली थी।
2. हुई वीरता के वैभव...........................वह आई झाँसी में।
3. अनुनय विनय नहीं.........................उसने पैरों ठुकराया।
4. रानी गई सिधार ..........................बन स्वतंत्रता–नारी थी।

•••